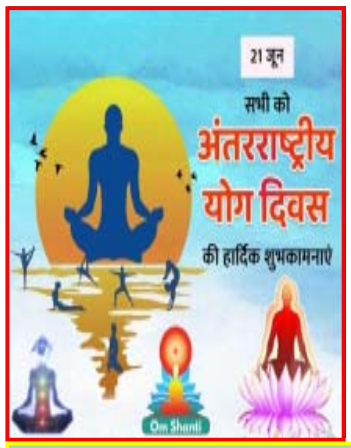

"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ष : 16 अंक : 23 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 20 जून से 26 जून, 2024 पृष्ठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

नालंदा से कई देशों की विरासत जुड़ी

आग की लपटें किताबें जला सकती है, लेकिन ज्ञान को नहीं: प्रधानमंत्री

नई दिल्ली । प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के राजगीर में नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन किया और इसे भारत की जीवंत संस्कृति और विरासत का प्रतीक कहा। इस कार्यक्रम में विदेश मंत्री एस जयशंकर, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और 17 देशों के राजदूत शामिल हुए। कैंपस का उद्घाटन करने के बाद पीएम मोदी ने कहा कि नालानाडा यूनिवर्सिटी सिर्फ एक नाम नहीं बल्कि देश की एक पहचान है। उन्होंने कहा कि नालंदा भारत की शैक्षणिक विरासत और जीवंत सांस्कृतिक आदान–प्रदान का प्रतीक है। अपने प्राचीन खंडहरों के निकट नालन्दा का पुनर्जागरण।

यह नया परिसर दुनिया को भारत की क्षमता से परिचित कराएगा। मोदी ने कहा कि मुझे तीसरे कार्यकाल की शपथ ग्रहण करने के बाद पहले 10 दिनों में ही नालंदा आने का अवसर मिला है। ये मेरा सौभाग्य तो है ही, साथ ही मैं इसे भारत की विकास यात्रा के एक शुभ संकेत के रूप में देखता हूं। उन्होंने कहा कि नालंदा एक पहचान है, एक सम्मान है। नालंदा एक मूल्य है, मंत्र है, गौरव है, गाथा है। नालंदा उद्घोष है इस सत्य का... कि आग की लपटों में पुस्तकें भले जल जाएं... लेकिन आग की लपटें ज्ञान को नहीं मिटा सकतीं। उन्होंने कहा कि नालंदा बताएगा...जो राष्ट्र, मजबूत मानवीय मूल्यों पर खड़े होते हैं... वो राष्ट्र इतिहास को पुनर्जीवित करके बेहतर भविष्य की नींव रखना जानते हैं। पीएम मोदी ने इतिहासकारों के दावों का जिक्र करते हुए कि प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय में लाखों किताबें और पांडुलिपियां अफगान कमांडरों द्वारा जला दी गईं थीं, कहा, नालंदा इस सत्य की घोषणा है। किताबें आग की लपटों में जल सकती हैं, लेकिन आग की लपटें ज्ञान को नष्ट नहीं कर सकती हैं। अफगान कमांडरों द्वारा जला दिया गया। फ़ारसी इतिहासकार सिराज ए मिनाज ने अपनी तबकात–ए–नसीरी में दावा किया कि अफगान कमांडर बख्तियार खिलजी ने नालंदा में 9 मिलियन से अधिक किताबें जला दी थीं। उन्होंने कहा कि नालंदा केवल भारत के ही अतीत का पुनर्जागरण नहीं है। इसमें विश्व के, एशिया के कितने ही देशों की विरासत जुड़ी हुई है। नालंदा यूनिवर्सिटी के पुनर्निर्माण में हमारे साथी देशों की भागीदारी भी रही है। मैं इस अवसर पर भारत के सभी मित्र देशों का अभिनंदन करता हूं। उन्होंने कहा कि प्राचीन नालंदा में बच्चों का प्रवेश उनकी पहचान, उनकी राष्ट्रीयता को देखकर नहीं होता था। हर देश, हर वर्ग के युवा यहां आते थे। नालंदा विश्वविद्यालय के इस नए कैंपस में हमें उसी प्राचीन व्यवस्था को फिर से मजबूती देनी है। दुनिया के कई देशों से यहां छात्र आने लगे हैं। यहां नालंदा में 20 से ज्यादा देशों के **students** पढ़ाई कर रहे हैं। ये वसुधैव कुटुंबकम की भावना का कितना सुंदर प्रतीक है। मोदी ने कहा कि 21 जून को **International Yoga Day** है। आज भारत में योग की सैकड़ों विधाएँ मौजूद हैं। हमारे ऋषियों ने कितना गहन शोध इसके लिए किया होगा! लेकिन, किसी ने योग पर एकाधिकार नहीं बनाया। उन्होंने कहा कि आज पूरा विश्व योग को अपना रहा है, योग दिवस एक वैश्विक उत्सव बन गया है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि मेरा मिशन है...भारत दुनिया के लिए शिक्षा और ज्ञान का केंद्र बने। भारत की पहचान फिर से दुनिया के सबसे प्रमुख ज्ञान केंद्र के रूप में हो।

कभी भी गिर सकती है मोदी सरकार! राहुल गांधी ने किया ऐसा दावा, भाजपा की बढ़ सकती है बेचौनी

नई दिल्ली । कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा कि सत्तारूढ़ एनडीए की संख्या बहुत नाजुक है और थोड़ी सी गड़बड़ी ष्सरकार गिरा सकती हैष्। लोकसभा चुनाव परिणामों पर राहुल गांधी ने कहा कि संख्याएं ऐसी हैं कि बहुत नाजुक हैं और जरा सी गड़बड़ी सरकार गिरा सकती है।

मूलतः, एक (एनडीए) सहयोगी को दूसरे रास्ते पर जाना होगा। उन्होंने यह भी दावा किया कि एनडीए के कुछ साथी हमारे संपर्क में हैं लेकिन उन्होंने कोई नाम नहीं बताया लेकिन कहा कि मोदी खेमे के भीतर बहुत बड़ा असंतुलन है।कांग्रेस नेता के हवाले से कहा गया है कि लोकसभा चुनाव के नतीजों से पता चलता है कि भारतीय राजनीति में एक बड़ा बदलाव आया है और दावा किया कि मोदी का विचार और छवि नष्ट हो गई है। उन्होंने तर्क दिया कि मोदी के नेतृत्व वाली तीसरी एनडीए सरकार ष्संघर्ष करेगी क्योंकि 2014 और 2019 में नरेंद्र मोदी के लिए जो काम किया वह काम नहीं कर रहा हैष्। नतीजों के बारे में बोलते हुए गांधी ने कहा कि यह विचार कि आप नफरत फैला सकते हैं, आप गुस्सा फैला सकते हैं और आप इसका लाभ उठा सकते हैं, भारतीय लोगों ने इस चुनाव में इसे खारिज कर दिया है। राहुल ने कहा कि जिस पार्टी ने पिछले 10 साल अयोध्या के बारे में बात करते हुए बिताए, उसका अयोध्या में सफाया हो गया है।श मूलतः जो हुआ है वह यह है कि भाजपा की धार्मिक नफरत पैदा करने की मूल अवधारणा ध्वस्त हो गई है। उन्होंने विपक्ष के अच्छे प्रदर्शन का श्रेय अपनी दो भारत जोड़ो यात्राओं को भी दिया। उन्होंने कहा कि न्यायिक प्रणाली, मीडिया, संस्थागत ढाँचा सभी बंद थे (विपक्ष के लिए), और इसलिए हमने निर्णय लिया कि हमें वस्तुतः, भौतिक रूप से ऐसा करना होगा। इस चुनाव में सफल होने वाले बहुत सारे विचार उसी दीवार से आए थे।

प्रधानमंत्री ने बिहार को विशेष राज्य का दर्जा क्यों नहीं दिया : जयराम रमेश

नयी दिल्ली(संवाद सूत्र)। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बिहार दौरे के मद्देनजर राज्य से संबंधित कुछ विषयों को लेकर उन पर निशान साधा और सवाल किया कि उन्होंने अपने वादे के मुताबिक बिहार को अब तक विशेष राज्य का दर्जा क्यों नहीं दिया। कांग्रेस ने नीट परीक्षा में कथित प्रश्नपत्र लीक का विषय उठाते हुए यह भी कहा कि क्या प्रधानमंत्री छात्रों को यह भरोसा दिला सकते हैं कि इस मामले मेंसुधारात्मक कदम उठाए जाएंगे? पार्टी नेता जयराम रमेश ने एक्स पर पोस्ट किया, एक तिहाई प्रधानमंत्री नालंदा विश्वविद्यालय का उद्घाटन करने के लिए बिहार जा रहे हैं।

चुनाव अभियान के दौरान हमने उनसे कुछ सवाल पूछे थे। हम आशा करते हैं कि वह अब इनके उत्तर देंगे। उन्होंने सवाल किया, प्रधानमंत्री के वादे के अनुरूप बिहार को विशेष राज्य का दर्ज़ा क्यों नहीं दिया गया? कांग्रेस महासचिव ने कहा, 2014 में जब मोदी प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार थे तब उन्होंने कई बार बिहार को विशेष राज्य का दर्ज़ा देने का वादा किया था। केंद्र की अपनी बहुआयामी ग़रीबी सूचकांक (एमपीआई) रिपोर्ट के अनुसार, बिहार भारत का सबसे ग़रीब राज्य है। राज्य की 52 प्रतिशत आबादी की ठीक से स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधा तक पहुंच नहीं है।

जय आत्मेश्वर
आध्यात्मिक यात्रा

ईश्वर दिए क्या, जानना चाहते,
तनिक देखो,एक बार अपनी ओर।
आप खुद जो हो,कीमती अनमोल,
आत्मेश्वर थामे, आपकी हैं डोर।।

धन्यवाद करो, तो हृदय से करो,
आभार मानो, आत्मीयता से।
प्रभु भीतर ही, मिलने लगेगा,
सुन्दर विचारों की,सामुहिकता से।।

जहाँ पहुँच गए, जो मिला कृपा में,
आनन्दित हो, करिए सम्मान।
आगे योजना, बनाते ईश्वर,
धन्यवाद आभार, जियो वर्तमान।।

एहसास करो, मैंने पा लिया है,
परमेश्वर है, मेरे भीतर।
नाटक ही सही, होगा सूक्ष्म प्रभाव,
वातावरण बना, मिलेगा ईश्वर।।

साधनारत रहिए, हर पल ही,
साधना नहीं करनी है, जंगल में।
आज जहाँ हैं, जो है कार्य क्षेत्र,
आत्म सानिध्य,रखना है दिल में।।

आत्म सानिध्य में,करोगे नियंत्रित,
परमात्मा ही, करेंगे देख रेख।
सर्वत्र होगा, आनन्द मंगल,
सदा ही होगी,सफलता से भेंट।।

हर कर्म का फल, होगा प्रेमानन्द,
अपनों संग होंगे, या गैरों में।
ईश्वर सानिध्य, रहना सीख लो,
मुक्तिधाम मंजिल, होगी पैरों में।।

आत्मिक श्रीधर
स्रोत- सद्गुरु कृपा

पिता दिवस के अवसर पर
सभके हीया से अनघा बधाई बा

भोजपुरी पूर्वी गीत – हमरे बाबूजी।

जनमवा तू दिहला बाबूजी बनल हमरो जतरा,
हमरे बाबूजी, किरिपा कईला भरपूर हमरे बाबूजी।

हमके तू दिहला बाबूजी सुनर करमवा,
हमरे बाबूजी,
जिनीगिया भईल मालामाल,
हमरे बाबूजी।

हमके चलवला बाबूजी अंगुरिया पकड़ी, हमरे बाबूजी,
जगवा में भईली खुशहाल हमरे बाबूजी।

दुखवा तू सहला बाबूजी सुखवा खूब दिहला हमरे बाबूजी,
तोहरे करनवा लोगवा पूछे हाल चाल हमरे बाबूजी।

बाबूजी से बढ़ी के केहू नाही होला हमरे बाबूजी।
तोहरे बिना जिनिगिया बा बेहाल हमरे बाबूजी।

श्याम कुंवर भारती (राजभर)
बोकारो,झारखंड

तू भी बुद्ध

इस सरल–तरल से जीवन में
क्यों आस लगाए बैठा है।
तू सक्षम है, तू महाबुद्ध
तू ही प्रबुद्ध , तू युद्ध युद्ध!

तू महा काल का शांति पुत्र,
तू इँसां दल, तू ही विशिष्ट,
तू ही तो नव निर्माता है ,
पीता अमृत का प्याला है !

तेरे अन्तर की ज्वाला ने
फूँकी कितनी ही मधुशाला,
तू तार बद्ध, तू सार बद्ध,
तू जामवंत, सुग्रीव–विशिष्ठ!

तू कहाँ किसी से डरता है,
तू मुफ्त नहीं यूँ मरता है,
पापों के बाग उजाड़े हैं
तू सबक दुष्ट का बनता है!

जब कलयुग का हो महा ध्वंस,
तू अचरज मत कर ये निकट,
खुद को रख ले तू पाक साफ
सत युग में, हो जाए प्रविष्ट!

शेखर रामकृष्ण तिवारी
बोईसर, पालघर

काले और सुनहरे रंग का,
होते देखा संगम,
समा गए छोटी आँखों में,
कितने दृश्य विहंगम।

यहाँ–वहाँ जो छितरे थे,
लौट गए सब घर को।
भटके कहाँ–कहाँ बेचारे,
अपनी गुजर बसर को।

बांटे खुले हाथ से रवि देखो,
इन्द्रधनुष के रंग,
वो भी जी ले स्वप्न जगत के,
जिनके रीते सब रंग।

जाते–जाते भी देता जाए,
ठंडे मीठे कितने एहसास।
जीवन के प्रति जिससे
सबका, बना रहे विश्वास।

डूबने की जो तुम सोच रहे,
डूबो परिश्रम के शोर में,
ताकि उदय हो सके तुम्हारा,
फिर सफ़लता की भोर में।

हार पर मत दावं लगाना,
तुम जीते हुए जीवन का,
देख रहे सब राह तुम्हारी,
इंतजार बस सूरज ढलने का।

सविता रजनी
बी ए आर सी,
तारापुर,बोईसर

आज की कहानी

बटुआ

खचाखच भरी बस में कंडक्टर को एक गिरा हुआ बटुआ मिला जिसमे एक पांच सौ का नोट और भगवान् कृष्ण की एक फोटो थी।

वह जोर से चिल्लाया , " अरे भाई! किसी का बटुआ गिरा है क्या?"

अपनी जेबें टटोलने के बाद सीनियर सिटीजन सीट पर बैठा एक आदमी बोला, "हाँ, बेटा शायद वो मेरा बटुआ होगा३ जरा दिखाना तो."

"दिखा दूंगा– दिखा दूंगा, लेकिन चाचाजी पहले ये तो बताओ कि इसके अन्दर क्या–क्या है?"

कुछ नहीं इसके अन्दर थोड़े पैसे हैं और मेरे कृष्ण जी की एक फोटो है.", चाचाजी ने जवाब दिया।

पर कृष्णा की फोटो तो किसी के भी बटुए में हो सकती है, मैं कैसे मान लूँ कि ये आपका है.", कंडक्टर ने सवाल किया।

अब चाचाजी उसके बगल में बैठ गए और जो उनके साथ बीता था वो सोचते हुए बोले, "बेटा ये बटुआ तब का है जब मैं हाई स्कूल में था। जब मेरे बाबूजी ने मुझे इसे दिया था तब मेरे कृष्णा की फोटो इसमें थी।

लेकिन मुझे लगा कि मेरे माँ–बाप ही मेरे लिए सब कुछ हैं इसलिए मैंने कृष्णा की फोटो के ऊपर उनकी फोटो लगा दी३।

जब युवा हुआ तो लगा मैं कितना हैंडसम हूँ और मैंने माँ–बाप के फोटो के ऊपर अपनी फोटो लगा ली३।

फिर मेरी एक लड़की से शादी हो गयी। मैंने अपनी फोटो के ऊपर उसकी फोटो लगा ली।

कुछ समय के बाद मेरे बेटे का जन्म हुआ। अब इस बटुए में मैंने सबसे ऊपर अपने बेटे की फोटो लगा ली३

पर अब जगह कम पड़ रही थी, सो मैंने कृष्णा और अपने माँ–बाप की फोटो निकाल कर बक्से में रख दी३

और विधि का विधान देखो, फोटो निकालने के दो–चार साल बाद माता–पिता का देहांत हो गया३ और दुर्भाग्यवश उनके बाद मेरी पत्नी भी एक लम्बी बीमारी के बाद मुझे छोड़ कर चली गयी।

इधर बेटा बड़ा हो गया था, उसकी नौकरी लग गयी, शादी हो गयी३बहु–बेटे को अब ये 'घर छोटा लगने लगा, उन्होंने अपार्टमेंट में एक फ्लैट ले लिया और वहां चले गए।

अब मैं अपने उस घर में बिलकुल अकेला था जहाँ मैंने तमाम रिश्तों को जीते–मरते देखा था३

पता है, जिस दिन मेरा बेटा मुझे छोड़ कर गया, उस दिन मैं बहुत रोया३ इतना दुःख मुझे पहले कभी नहीं हुआ था३कुछ नहीं सूझ रहा था कि मैं क्या करूँ और तब मेरी नज़र उस बक्से पर पड़ी जिसमे सालों पहले मैंने सबसे पहली कृष्ण जी की फोटी अपने बटुए से निकाल कर रख दी थी३

मैंने फ़ौरन वो फोटो निकाली और उसे अपने सीने से चिपका लिया।३अजीब सी शांति महसूस हुई३लगा मेरे जीवन में तमाम रिश्ते जुड़े और टूटे३ लेकिन इन सबके बीच में मेरे भगवान् से मेरा रिश्ता अटूट रहा३ मेरे कृष्ण जी कभी भी मुझसे रूठे नहीं३

और तब से इस बटुए में सिर्फ मेरे कृष्ण जी की फोटो है और किसी की भी नहीं। मुझे इस बटुए और उसमे पड़े पांच सौ के नोट से कोई मतलब नहीं है, मेरा स्टॉप आने वाला है३तुम बस बटुए की फोटो मुझे दे दो३मेरा कृष्ण जी मुझे दे दो।

कंडक्टर ने फौरन बटुआ चाचाजी के हाथ में रखा और उन्हें एक टक देखता रह गया।

घ्घ्दोस्तो ! यह कोई जरूरी नहीं कि बेटा बुढ़ापे में आपको सुख देगा। अपनी खुशी का रिमोट कंट्रोल किसी के हाथ में नहीं देना। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए खुश रहना बहुत जरूरी है ।

अटेंशन

आप अकेले नहीं परमात्मा आपके साथ है।

बाकी जिनके भी पीछे आप परमात्मा को छोड़ कर भाग रहे है।विश्वास कीजिए कुछ काम न आयेंगे।और एक दिन आपको रुलाएंगे। ओम शांति।

कृ सुनिता शेणॉय
बदलापूर, महाराष्ट्र

समाज सेवक शरीफ खान का सम्मान समारोह संपन्न'

मुंबई– महाराष्ट्र कांग्रेस उत्तरभारतीय सेल के सचिव एवम समता हाकर्स युनियन मुंबई के अध्यक्ष शरीफ खान के जन्म दिवस पर सम्मान समारोह का आयोजन केशव पाड़ा,मुलुंड प. पर युवाब्रिगेड एसोसिएशन मुंबई के अध्यक्ष डॉ.सचिन सिंह द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता

डॉ.बाबुलाल सिंह,डॉ.सचिन सिंह (महासचिव उत्तर भारतीय सेल महाराष्ट्र कांग्रेस),संदीप पाशीलकर (मुख्य संघटक रा.का.पा. मुंबई सेवादल),अशोक साल्वे (आर टी आई एक्टिविस्ट), चंद्रवीर यादव (शिक्षाविद),अजीत यादव (राकापा संघठक), मोहित सिंह (महासचिव उत्तर पुर्व युवक कांग्रेस), दयाशंकर पाल (आशिहारा कराटे प्रशिक्षक), समाज सेवक मैथ्यु चेरियन, राकेश यादव, राकेश मिश्र,राजेश सिंह ने शाल एवम पुष्प गुच्छ भेंट कर शरीफ खान को ईद की बधाई एवम उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभ कामनायें प्रदान किया।

पालघर के वसई में बीच सड़क पर सरफिरे आशिक ने की अपनी प्रेमिका की हत्या, लोग बने मूकदर्शक

अमित शिवकुमार दुबे,कार्यकारी संपादक
ज्ञान सरोवर

वसई। पालघर जिले के वसई में एक मानवता को शर्मशार करने वाला मामला सामने आया है जहाँ एक सरफिरे आशिक ने अपनी ही प्रेमिका को दिनदहाड़े मौत के घाट उतार दिया।जबकि वारदात के समय सड़क पर काफी भीड़ थी।किसी ने भी हिम्मत करके उस खूनी को रोकने की कोशिश नहीं की।दिनदहाड़े भरी सड़क पर वह अपनी प्रेमिका पर तब तक लगातार लोहे के राड से हमला करता रहा जब तक कि प्रेमिका की मौत नहीं हो गई।

इस वरदाद का सारा मामला नजीदी सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गया।आरोपी अपने प्रेमिका के आने का इंतजार कर रहा था जैसे ही उसकी प्रेमिका पहुंची आरोपी ने अपनी ही प्रेमिका पर लगातार 15 से ज्यादा बार लोखंड के राड से लगातार सिर पर वार किया और मौत के घाट उतार दिया।आरोपी को फिलहाल पुलिस ने अरेस्ट कर लिया है और मामले की जांच में जुट गई है। दुर्भाग्य की बात यह है कि एक खूनी दिनदहाड़े अपनी प्रेमिका पर हमला करता है और वहाँ मौजूद लोग उसे रोकने तक की कोशिश नहीं करते बल्कि इसके विपरीत खड़े हो कर वीडियो बनाते रहे।इस तरह की भावशून्यता हमारे समाज को किस ओर ले जाएगी–विचारणीय है।

कुमार इंडस्ट्रीज़ की टेक्सटाईल्स इंडस्ट्रीज़ में धमक

अमित शिवकुमार दुबे,कार्यकारी संपादक, महाराष्ट्र ज्ञान सरोवर,

पालघर।पालघर ज़िले के औद्योगिक शहर तारापुर में स्थित कुमार इंडस्ट्रीज़ के मालिक श्री रविकान्त पाण्डेय जी ने आभा टेक्सटाईल्स नाम से एक नयी कंपनी की नींव रखी और इसके माध्यम से टेक्सटाईल्स के क्षेत्र में अपना कदम रखा।पूरे परिवार और शुभचिंतकों की उपस्थिति में सुबह भगवान श्री सत्य नारायण की कथा–पूजा के बाद श्री पाण्डेय ने नई अत्याधुनिक मशीनों को स्टार्ट किया और उत्पादन को हरी झंडी दे दी।

शहर के प्रतिष्ठित उद्योगपति श्री रविकान्त पाण्डेय जी के निमंत्रण पर सैकड़ों समाजसेवी–उद्योगपति आभा टेक्सटाईल्स में उपस्थित हुए और श्री पाण्डेय जी को अपनी शुभकामनाओं से अभिसिंचित किए।विप्र फ़ाऊंडेशन,नमो–नमो मोर्चा,उत्तर भारतीय सेवा समिति,लोक कल्याण संस्था आदि के सभी प्रमुख और कार्यकर्ताओं ने उपस्थित होकर आभा टेक्सटाईल्स के उद्घाटन कार्यक्रम को भव्य बना दिया।

सायंकाल श्री सुंदरकांड की संगीतमय प्रस्तुति ने वातावरण को आध्यात्मिकता के रंग में रंग दिया।श्री हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ व श्री राम आरती के बाद उपस्थित लोगों को उत्तर भारतीयों का प्रसिद्ध स्वादिष्ट व्यंजन बाटी–चोखा परोसा गया।श्री पाण्डेय जी के सरल स्वभाव की सभी ने भूरि–भूरि प्रसंशा और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापूके साधक समिति द्वारा मुलुंड पश्चिम उपनगर मे प्रभात फेरी निकाली गई

मुलुंड साधक परिवार द्वारा प्रत्येक रविवार को इसी प्रकार से प्रभात फेरी एवं भगवन्नाम संकीर्तन यात्रा निकाली जाती है। प्रभात फेरी की बड़ी भारी महिमा है, इसमे भगवन्नाम जप तथा संकीर्तन करने से वातावरण पवित्र एवं भक्तिमय हो जाता है। वैज्ञानिक एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह अत्यंत लाभदायक है, सुबह–सुबह शांत और प्रदूषण रहित वातावरण में पैदल चलने से शरीर स्वस्थ और मन प्रसन्न रहता है। अतः ऐसी प्रभात फेरियां अन्य स्थानों पर भी निकालनी चाहिए।

सम्पादकीय...

उम्मीदवारों का चयन सही साबित हुए

अचानक कहीं कुछ नहीं होता, अंदर ही अंदर कुछ घिस रहा होता है, कुछ पिस रहा होता है।य इन पंक्तियों में कवि ने इस बात पर इशारा किया है कि किसी भी काम का विपरीत अंजाम आने पर हमें ऐसा क्यों लगता है कि ऐसा कैसे हो गया? जबकि उसके पीछे के कारणों पर कोई ध्यान नहीं देता। ऐसा ही कुछ हुआ 2024 के उत्तर प्रदेश में लोक सभा चुनाव परिणाम के बाद। यहां बीजेपी को पहले के मुकाबले इस बार बहुत कम सीटें मिलीं। ऐसा क्या कारण था कि भाजपा का प्रदर्शन इतना बुरा रहा? अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण। अनुच्छेद 370 का हटाना। तीन तलाक को खत्म करना। ये ऐसे कुछ मुद्दे थे जिन पर भाजपा को पूरा विश्वास था कि वह श्अबकी बार 400 पास्य के अपने नारे को सच कर दिखाएंगे, परंतु ऐसा न हो सका। ऐसा माना जाता है कि दिल्ली की गद्दी का रास्ता लखनऊ से होकर जाता है। इस बार के चुनाव में उत्तर प्रदेश का जो परिणाम रहा उसने सत्तारूढ़ दल को यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि ऐसी कौन सी कमी उनकी नीति में थी जो वोटरों को अपनी ओर आकर्षित करने में विफल रही? ऐसा क्या हुआ कि पार्टी कार्यकर्ताओं में वो उत्साह नहीं था जो पिछले दो लोक सभा चुनावों में देखा गया? क्या संगठन के काम करने के ढंग या उनके द्वारा लिये गए गलत फैसलों ने जमीनी कार्यकर्ताओं को हतोत्साहित किया? क्या उत्तर प्रदेश में या अन्य राज्यों में, जहां भाजपा का प्रदर्शन संतोषजनक नहीं था वहां पर उम्मीदवारों के चयन में गलती हुई? हिंदुओं के लिए पूजनीय अयोध्या, रामेरम में मिली हार और प्रधानमंत्री को वाराणसी में पिछली बार के मुकाबले बहुत कम अंतर से मिली जीत भी सवालों के घेरे में है। इन नतीजों के बाद सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत का श्अहंकारस्य की ओर इशारा करना भी क्या इस बुरे प्रदर्शन का कारण बना? सूत्रों के अनुसार इस बार के चुनाव में कम सीट आने के पीछे भाजपा में अंदरूनी कलह ने भी एक बड़ी भूमिका निभाई। जिस तरह केंद्र के नेतृत्व द्वारा राज्य की सरकारों व राज्यों के नेताओं की उपेक्षा की गई और वो फिर जनता के सामने आई वह भी इन नतीजों का कारण बनी। भाजपा और संघ के बीच हुए मतभेदों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। यदि केंद्र और राज्य के नेतृत्व में कोई मतभेद थे तो उन्हें समय रहते एक मर्यादा के तहत हल किया जाना चाहिए था। भाजपा और संघ के कार्यकर्ताओं का इस बार के चुनावों में सक्रिय योगदान नहीं दिखाई दिया उससे देश भर में एक संदेश गया है कि राष्ट्रीय नेतृत्व जमीन से कट गया है। इस बार के चुनाव को इतने चरणों में बांटने से भी कार्यकर्ताओं की सहभागिता में कमी नजर आई। कार्यकर्ताओं को इस बात का पूर्ण विश्वास था कि पिछले दस वर्षो में देश में ऐसे कई बदलाव आए हैं, जो तीसरी बार भी मोदी सरकार को पूर्ण बहुमत दिलाएंगे। इसी के चलते भी कार्यकर्ताओं में उतना उत्साह दिखाई नहीं दिया। वहीं दूसरी ओर देखें तो समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव और उनके कार्यकर्ताओं ने जिस तरह उत्तर प्रदेश के चप्पे–चप्पे पर अपनी नजर बनाए रखी और भागदौड़ की वो काफी फायदेमंद रहा। सपा के उम्मीदवारों का चयन और श्इंडियाय गठबंधन के घटक दलों का उन पर भरोसा, दोनों ही इन चुनावों में सही साबित हुए। यदि समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता इसी ऊर्जा और रणनीति से अभी से जुटे रहेंगे तो 2027 के विधान सभा चुनावों में भी उनका प्रदशर्न बढ़िया रहेगा। उत्तर प्रदेश के अगले विधान सभा चुनाव में यदि सही रणनीति और सही उम्मीदवारों का चयन हो, यदि वहां की जनता की समस्याओं के समाधान की एक ठोस योजना हो तो उन मतों को भी अपने पाले में लाया जा सकता है जो बुनियादी मुद्दों से भटका दिये गए हैं। इतना ही नहीं, जिस तरह समाजवादी पार्टी को एक विशेष वर्ग के लोगों की पार्टी माना जाता था, उसका भी भ्रम इस बार के चुनावों में टूटा है। सभी हिंदू तीर्थ स्थलों में सपा ने भाजपा को शिकस्त दी है। समाजवादी पार्टी ने जिस तरह श्एम–वाईय फैक्टर को नए रूप में पेश किया वह भी काम कर गया है। जिस तरह भाजपा हर समय चुनावी मूड में रहती है यदि विपक्षी पार्टयिां भी उसी मूड में रहें तो भाजपा को कड़ी टक्कर दे पाएंगी। इसके साथ ही सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों को ही इस बात पर भी तैयार रहना चाहिए कि यदि किसी दल को पूर्ण बहुमत नहीं मिलता है तो गठबंधन की सरकार ही विकल्प होता है। यदि कोई भी दल इस अहंकार में रहे कि वो एक बड़ा और प्रभावशाली राजनैतिक दल है और विपक्ष दशर्क दीर्घा में बैठने के लिए है तो फिर उसे तब झटका लगेगा ही जब उसे सरकार बनाने के लिए अन्य दलों के आगे झुकना पड़ेगा। हर दल को जनता के फैसले का सम्मान करना चाहिए। गठबंधन की सरकार में हर वो दल जिसके पास अच्छी संख्या हो वह किसी न किसी बात पर उखड़ भी सकता है। इसलिए भलाई इसी में है कि अपनी गलतियों से सबक लिया जाए और श्सबका साथ और सबका विकासस्य अमल में लाया जाए।

अगर लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए चुनाव हुआ तो क्या यह भारतीय राजनीति के इतिहास की बड़ी घटना होगी?

18वीं लोकसभा का अध्यक्ष कौन होगा, इसको लेकर भाजपा और उसके सहयोगी दलों के बीच चर्चाओं का दौर जारी है। दूसरी ओर विपक्ष भी इस प्रयास में है कि अध्यक्ष पद के लिए अपना उम्मीदवार उतारा जाये। विपक्ष का यह भी कहना है कि सरकार को चाहिए कि वह उपाध्यक्ष का पद उसे दे लेकिन सरकार इस मूड़ में नहीं दिख रही है कि इन दोनों पदों में से कोई भी पद विपक्ष को दिया जाये। इसलिए माना जा रहा है कि 18वीं लोकसभा का सत्र हंगामेदार हो सकता है। हालांकि, राजनीतिक इतिहास पर नजर डालें तो पता चलता है कि अब तक लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए निर्वाचन आम सहमति से ही हुआ है। इसलिए विपक्ष अगले सप्ताह लोकसभा अध्यक्ष के पद के लिए उम्मीदवार उतारकर यदि चुनाव की स्थिति उत्पन्न करता है तो यह स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार होगा। लोकसभा में पीठासीन अधिकारी का चयन चूंकि हमेशा आम सहमति से होता रहा है इसलिए यदि यह परम्परा इस बार टूटती है तो यह एक बड़ी राजनीतिक घटना होगी।

पीठासीन अधिकारियों का इतिहास

हम आपको बता दें कि स्वतंत्रता से पहले संसद को केंद्रीय विधानसभा कहा जाता था और इसके अध्यक्ष पद के लिये पहली बार चुनाव 24 अगस्त 1925 में हुआ था जब स्वराजवादी पार्टी के उम्मीदवार विट्ठलभाई जे. पटेल ने टी. रंगाचारियर के खिलाफ यह चुनाव जीता था। अध्यक्ष के रूप में चुने जाने वाले पहले गैर–सरकारी सदस्य विट्ठलभाई जे. पटेल ने दो वोटों के मामूली अंतर से पहला चुनाव जीता। पटेल को 58 वोट मिले थे, जबकि टी. रंगाचारियार को 56 वोट मिले थे। केन्द्रीय विधान सभा के अध्यक्ष के पद के लिए 1925 से 1946 के बीच छह बार चुनाव हुए। विट्ठलभाई पटेल अपना पहला कार्यकाल पूरा होने के बाद 20 जनवरी 1927 को सर्वसम्मति से पुनः इस पद पर निर्वाचित हुए। महात्मा गांधी द्वारा सविनय अवज्ञा के आह्वान के बाद पटेल ने 28 अप्रैल, 1930 को पद छोड़ दिया। सर मुहम्मद याकूब (78 वोट) ने नौ जुलाई, 1930 को नंद लाल (22 वोट) के खिलाफ अध्यक्ष का चुनाव जीता। याकूब तीसरी विधानसभा के आखिरी सत्र के लिए इस पद पर रहे। चौथी विधानसभा में सर इब्राहिम रहीमतुल्ला (76 वोट) ने हरि सिंह गौर के खिलाफ अध्यक्ष का चुनाव जीता, जिन्हें 36 वोट मिले। स्वास्थ्य कारणों से 7 मार्च 1933 को रहीमतुल्ला ने इस्तीफा दे दिया और 14 मार्च 1933 को सर्वसम्मति से षणमुखम चेट्टी उनके स्थान पर नियुक्त हुए। सर अब्दुर रहीम को 24 जनवरी 1935 को पांचवीं विधानसभा का अध्यक्ष चुना गया। रहीम को 70 वोट मिले थे, जबकि टी.ए.के. शेरवानी को 62 सदस्यों का समर्थन प्राप्त था। रहीम ने 10 साल से अधिक समय तक उच्च पद संभाला क्योंकि पांचवीं विधानसभा का कार्यकाल समय–समय पर प्रस्तावित संवैधानिक परिवर्तनों और बाद में द्वितीय विश्व युद्ध के कारण बढ़ाया गया था। केंद्रीय विधानसभा के अध्यक्ष पद के लिए अंतिम मुकाबला 24 जनवरी, 1946 को हुआ था, जब कांग्रेस नेता जी.वी. मावलंकर ने कावसजी जहांगीर के खिलाफ तीन मतों के अंतर से चुनाव जीता था। मावलंकर को 66 मत मिले थे, जबकि जहांगीर को 63 मत मिले थे। इसके बाद मावलंकर को संविधान सभा और अंतरिम संसद का अध्यक्ष नियुक्त किया गया, जो 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू होने के बाद अस्तित्व में आई। मावलंकर 17 अप्रैल, 1952 तक अंतरिम संसद के अध्यक्ष बने रहे, जब पहले आम चुनावों के बाद लोकसभा और राज्यसभा का गठन किया गया। स्वतंत्रता के बाद से लोकसभा अध्यक्षों का चयन सर्वसम्मति से किया जाता रहा है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि केवल एमए अयंगर, जीएस ढिल्लों, बलराम जाखड़ और जीएमसी बालयोगी ही बाद की लोकसभाओं में प्रतिष्ठित पदों पर पुनः निर्वाचित हुए हैं। लोकसभा के पहले उपाध्यक्ष अयंगर वर्ष 1956 में मावलंकर की मृत्यु के बाद अध्यक्ष चुने गये थे। उन्होंने 1957 के आम चुनावों में जीत हासिल की और उन्हें दूसरी लोकसभा का अध्यक्ष चुना गया था। ढिल्लों को 1969 में अध्यक्ष एन संजीव रेड्डी के इस्तीफे के बाद चौथी लोकसभा का अध्यक्ष चुना गया था। ढिल्लों को 1971 में पांचवीं लोकसभा का अध्यक्ष भी चुना गया और वे 1 दिसंबर 1975 तक इस पद पर बने रहे। उन्होंने आपातकाल के दौरान यह पद छोड़ दिया था। इसके अलावा, बलराम जाखड़ सातवीं और आठवीं लोकसभा के अध्यक्ष रहे और उन्हें दो पूर्ण कार्यकाल पूरा करने वाले एकमात्र पीठासीन अधिकारी होने का गौरव प्राप्त है। बालयोगी को 12वीं लोकसभा का अध्यक्ष चुना गया, जिसका कार्यकाल 19 महीने का था। उन्हें 22 अक्टूबर 1999 को 13वीं लोकसभा का अध्यक्ष भी चुना गया। बालयोगी की 3 मार्च 2002 को एक हेलिकॉप्टर दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। पिछली लोकसभा में भाजपा सांसद ओम बिरला अध्यक्ष थे। इस बार वह अध्यक्ष बनेंगे या नहीं इसको लेकर संशय की स्थिति बनी हुई है। लेकिन एक बात साफ है कि अध्यक्ष पद भाजपा के पास ही रहेगा। प्रधानमंत्री ने लोकसभा अध्यक्ष के मुद्दे पर सहयोगी दलों के बीच सहमति बनाने का काम रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह को सौंपा हुआ है और माना जा रहा है कि एकाध दिन में इस मुद्दे पर स्थिति और स्पष्ट हो जायेगी। दूसरी ओर, विपक्ष भी कमर कस चुका है। दरअसल लोकसभा में अपनी बढ़ी हुई ताकत से उत्साहित विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' अब आक्रामक तरीके से उपाध्यक्ष के पद की मांग कर रहा है, जो परंपरागत रूप से विपक्षी दल के सदस्य के पास होता है। कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने कहा, "यदि सरकार विपक्ष के नेता को उपाध्यक्ष बनाने पर सहमत नहीं होती है तो हम लोकसभा अध्यक्ष पद के लिए चुनाव लड़ेंगे।" हम आपको बता दें कि 18वीं लोकसभा का पहला सत्र 24 जून को शुरू होगा, जिस दौरान निचले सदन के नए सदस्य शपथ लेंगे और अध्यक्ष का चुनाव होगा। गौरतलब है कि लोकसभा चुनाव में 'इंडिया' ने 234 सीटें जीतीं, जबकि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले राजग ने 293 सीटें जीतकर लगातार तीसरी बार सत्ता बरकरार रखी। 16 सीटों के साथ तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) और 12 सीटों के साथ जनता दल (यू) भाजपा की सबसे बड़ी सहयोगी हैं। भाजपा ने 240 सीटें जीती हैं। जद (यू) ने लोकसभा अध्यक्ष के लिए भाजपा उम्मीदवार को समर्थन देने की घोषणा की है, जबकि तेदेपा ने इस प्रतिष्ठित पद के लिए सर्वसम्मत उम्मीदवार का समर्थन किया है। हालांकि विपक्षी गठबंधन तेदेपा पर लोकसभा अध्यक्ष के पद पर जोर देने या पार्टी में धीरे–धीरे विघटन का सामना करने के लिए कह रहा है।

संसदीय प्रणाली में प्रधानमंत्री वही हो सकता है, जो लोकसभा मे बहुमत प्राप्त दल के संसदीय दल का नेता हो...

विश्वाजीत सिंह

जबकि इसबार नरेंद्र मोदी को भाजपा के चुने हुए सांसदों ने अपने संसदीय दल का नेता तो चुना ही नहीं.... अतरू लीगली यह सरकार पूरी तरह अवैध है, साथ ही राष्ट्रपति ने भी चली आ रही इस परिपाठी का पालन नही किया कि यह सरकार लोकसभा में अमुक दिनों में अपना बहुमत सिद्ध करे....

अब खुल रहीं परतें कि आखिर क्यों किया गया ऐसा.... ??

दैनिक भास्कर के पोलिटिकल एडिटर केपी मलिक का कहना है कि...

दरअसल संघ चाहता था कि मोदी के अलावा भाजपा का कोई और नेता प्रधानमंत्री बने। इसके लिए भाजपा संसदीय दल की बैठक में किसी और को नेता चुनने की योजना बनाई गई थी. ...

मोदी–शाह ने बड़ी चाल चलते हुए भाजपा संसदीय दल की बैठक ही नहीं होने दी। उन्होंने सीधे एनडीए की ही बैठक बुला ली, उसमें भी भाजपा सांसदों के अलावा पार्टी के मुख्यमंत्री और अन्य नेता घुसा दिए गए...

मोदी ने अपने आप को नेता चुनने का प्रस्ताव पास करवा लिया। परंतु भाजपा के सांसदों ने उन्हें अपना नेता वास्तव में चुना या नहीं ये किसी को पता नहीं चला... ९

साल 2014, 2019 में मोदी भाजपा के संसदीय दल के नेता चुने गए थे एनडीए के नहीं...

इस बार ऐसा क्यों नहीं हुआ। राजनीतिक दल केवल अपने–अपने संसदीय दलों के नेता ही चुन सकते हैं, और दूसरी पार्टी को केवल समर्थन दे सकते हैं, जबकि यहाँ एनडीए नेताओं के अलावा सूबों के मुख्यमंत्री भी शामिल थे....

"कांटों की तो फितरत ही चुभने की है, अगर आप खुद संभल कर नहीं चलते तो, इसमें कांटे का क्या कसूर"!!?

जिसमें किनारे छोड़ने का साहस होता है, वही समंदर की गहराइयां खोज कर नए खजाने ढूंढ सकता है|||

कहते हैं कि सूर्य की चिलचिलाती धूप भी किसी को इतना नहीं जला पाती, जितना कि ईर्ष्या व्यक्ति को अंदर तक जला देती है|||

ध्यान रहे कि नकारात्मकता के कारण परिवार का एक व्यक्ति भी पूरे परिवार का संतुलन बिगाड़ सकता है|||

ओम शांति

पलकों पर और दिल में

अपने जीवन चरित्र को देना, ऐसा श्रेष्ठ आकर
करने को आतुर हो, तुम्हें सारी दुनिया स्वीकार

प्रकृति पाँच तत्वों की, अपने नियमों पर चलती
हमारे चाहने पर भी वो, अपना मार्ग न बदलती

मन रहेगा शांत यदि, ये प्रकृति भी मुस्कायेगी
सागर की तूफानी लहरें, थमती नजर जायेगी

जीवन के महासागर में, तुम रहो सदा आनंदित
आने वाले दुख के झोंके, सब हो जायेंगे मंदित

शक्ति अनन्त समाई है, जब झांकोगे तुम अंदर
विजय रत्न चुनने को, तुम जाना मध्य समंदर

तुम हो सर्वशक्तिवान, खुद में विश्वास जगाओ
विघ्नों की लहरों का, तुम शिखर चूमकर आओ

आत्म उन्नति का साधन, ये जीवन बने तुम्हारा
स्वयं को तुम चमकाने में, समय खपाओ सारा

दिव्य शक्तियों का तुम, नस नस में करो संचार
पलकों पर और दिल में, रखेगा तुझको संसार

ऊँ शांति

मुकेश कुमार मोदी,

बीकानेर, राजस्थान

चिन्तन के चिराग से चिन्ता मिटाओ

रुककर जरा सा देख ले, तूँ किसके पीछे भाग रहा
चौन की नींद गंवाकर तूँ, किस चिन्ता में जाग रहा

चिन्ता के चौराहे पर बैठा, चिन्तन क्या कर पायेगा
मन के बिगड़े सन्तुलन से, जीवन भटकता जायेगा

चिन्ता रूपी ये दावानल, मानव को जिन्दा जलाता
चिन्तन का चिराग जले तो, नया मार्ग जीवन पाता

चिन्तन की पगडंडी कभी, इधर उधर न भटकाती
हर तनाव मिटाकर, आनन्द का अनुभव करवाती

चिन्तन इक शीतल चाँदनी, घोर अंधियारा भगाती
कुण्ठा, निराशा और हताशा, अन्तर्मन से मिटाती

आत्म सृजन करो अपना, बहाकर चिन्तन की धार
चिन्ता लुप्त हो जायेगी, उभरेंगे जब दिव्य संस्कार

छोड़कर सारी चिन्ताएं, कर लो तुम आत्म चिन्तन
बन जायेगा सारा जीवन, महकता हुआ एक चन्दन

ऊँ शांति

मुकेश कुमार मोदी,

बीकानेर, राजस्थान

मृत्यु का स्मरण

संत एकनाथ जी के पास एक बूढ़ा पहुँचा और बोलाः—

आप भी गृहस्थी, मैं भी गृहस्थी। आप भी बच्चों वाले, मैं भी बच्चों वाला

आप भी सफेद कपड़ों वाले, मैं भी सफेद कपड़े वाला।

लेकिन आपको लोग पूजते हैं, आपकी इतनी प्रतिष्ठा है, आप इतने खुश रह सकते हो, आप इतने निश्चिन्त जी सकते हो और मैं इतना परेशान क्यों.?

आप इतने महान् और मैं इतना तुच्छ क्यों.?

एकनाथजी ने सोचा कि इसको सैद्धान्तिक उपदेश देने से काम नहीं चलेगा, उसको समझ में नहीं आयेगा।

कुछ किया जाय३

एकनाथ जी ने उसे कहाः चल रे सात दिन में मरने वाले..!

तू मुझसे क्या पूछता है अब क्या फर्क पड़ेगा ? सात दिन में तो तेरी मौत है

वह आदमी सुनकर सन्न रह गया। एकनाथ जी कह रहे हैं सात दिन में तेरी मौत है तो बात पूरी हो गई।

वह आदमी अपनी दुकान पर आया लेकिन उसके दिमाग में एकनाथ जी के शब्द घूम रहे हैं— सात दिन में मौत है.....

उसको धन कमाने का जो लोभ था, हाय—हाय थी वह शान्त हुई।अपने प्रारब्ध का जो होगा वह मिलेगा। ग्राहकों से लड़ पड़ता था तो अब प्रेम से व्यवहार करने लगा।

शाम होती थी तब दारू के घूँट पी लेता था वह दारू अब फीका हो गया।

एक दिन बीता३.दूसरा बीता३. तीसरा बीता३.।

उसे भोजन में विभिन्न प्रकार के, विभिन्न स्वाद के व्यंजन, आचार, चटनी आदि चाहिए था, जरा सी कमी पड़ने पर आग—बबूला हो जाता था।

अब उसे याद आने लग गया कि तीन दिन बीत गये, अब चार दिन ही बचे।

कितना खाया—पिया ! आखिर क्या.?

चौथा दिन बीता३.पाँचवाँ दिन आया३।

बहू पर क्रोध आ जाता था, बेटे नालायक दिखते थे, अब तीन दिन के बाद मौत दिखने लगी सब परिवारजनों के अवगुण भूल गया, गद्दारी भूल गया

समाधान पा लिया कि संसार में ऐसा ही होता है।

यह मेरा सौभाग्य है कि वे मुझ से गद्दारी और नालायकी करते हैं तो उनका आसक्तिपूर्ण चिन्तन मेरे दिल में नहीं होता है।

यदि आसक्तिपूर्ण चिन्तन होगा तो फिर क्या पता इस घर में चूहा होकर आना पड़े या साँप होकर आना पड़े या चिड़ियाँ होकर आना पड़े, कोई पता नहीं है।

पुत्र और बहुएँ गद्दार हुई हैं तो अच्छा ही है क्योंकि तीन दिन में अब जाना ही है।

इतने समय में मैं विट्ठल को याद कर लूँ— विट्ठला३विट्ठला३. विट्ठला३ भगवान का स्मरण चालू हो गया।

जीवन भर जो मंदिर में नहीं गया था, संतों को नहीं मानता था उस बूढ़े का निरन्तर जाप चालू हो गया।

संसार की तू—तू, मैं—मैं, तेरा— मेरा सब भूल गया।

छट्ठा दिन बीतने लगा।

ज्यों—ज्यों समय जाने लगा त्यों— त्यों बूढ़े का भक्तिभाव, नामस्मरण, सहज—जीवन, सहनशक्ति, उदारता, प्रेम, विवेक, आदि सब गुण विकसित होने लगे।

कुटुम्बी दंग रह गये कि इस बूढ़े का जीवन इतना परिवर्तित कैसे हो गया ?

हम रोज मनौतियाँ मनाते थे कि यह बूढ़ा कब मरे, हमारी जान छूटे।

बहुत पसारा मत करो कर थोड़े की आश।

बहुत पसारा जिन किया वे भी गये निराश।।

उस बूढ़े का छट्ठा दिन बीत रहा है। उसकी प्रार्थना में उत्कण्ठा आ गई है कि ष्हे भगवान ! मैं क्या करूँ ? मेरे कर्म कैसे कटेंगे.?

विठोबा३ विठोबा३ माजा विट्ठला३ माजा विट्ठला३. जाप चालू है। रात्रि में नींद नहीं आयी। रविदास की बात उसको शायद याद आ गई होगी, अनजाने में उसके जीवन में रविदास चमका होगा।

रविदास रात न सोइये दिवस न लीजिए स्वाद,

निश दिन हरि को सुमरीए छोड़ सकल प्रतिवाद।

बूढ़े की रात अब सोने में नहीं गुजरती, विठोबा के स्मरण में गुजर रही है।

सातवें दिन प्रभात हुई।

बूढ़े ने कुटुम्बियों को जगायाः "बोला माफ करना, किया कराया माफ करना, मैं अब जा रहा हूँ

कुटुम्बी रोने लगे किः अब तुम बहुत अच्छे हो गये हो, अब न जाते तो अच्छा होता।

बूढ़ा कहता हैः गोबर से लीपकर चौका लगाओ, मेरे मुँह में तुलसी का पत्ता दो, गले में तुलसी का मनका बाँधो, आप लोग रोना मत।

मुझे विठोबा के चिन्तन में मरने देना।

कुटुम्बी सब परेशान हैं, इतने में एकनाथ जी वहाँ से गुजरे। कुटुम्बी भागे एकनाथजी के पैर पकड़े, आप घर में पधारो।

एकनाथजी ने घर आकर बूढ़े से पूछाः क्यों, क्या बात है, क्यों सोये हो.?

महाराजजी ! आप ही ने तो कहा था कि सात दिन में तुम्हारी मौत है। छः दिन बीत गये यह आखिरी दिन है।

एकनाथजी उस बूढ़े से कहने लगेः तुमने मुझसे कहा था कि आप में और मुझमें क्या फर्क है।

मैंने तुम्हें कहा कि तुम्हारी सात दिन में मौत होगी, तुमने अपनी मौत को सात दिन दूर देखा। अब बताओ, तुमने सात दिन में आने वाली मौत को देखकर कितनी बार दारू पिया ?"

"एक बार भी नहीं।"

"कितनी बार क्रोध किया ?"

"एक बार भी नहीं।"

कितने लोगों से झगड़ा किया ?"

"किसी से भी नहीं

तुमको सात दिन, छः दिन, पाँच दिन, चार दिन दूर मौत दिखी

जितनी— जितनी मौत नजदीक आती गई उतना उतना तुम ईश्वरमय होते गये, संसार फीका होता गया। यह तुम्हारा अनुभव है कि नहीं ?

हाँ महाराज ! मेरा अनुभव है। सात दिन मौत दूर है तो संसार में कहीं रस नहीं दिखा, भगवान् में प्रीति बढ़ी, जीवन भक्तिमय बन गया

भगवान् का नाम सदा याद रखो हमारी मृत्यु सात क्या किसी भी पल आ सकती है...

सदा याद रखना है कि भगवान का बुलावा कभी भी आए सकता है और यही सत्य है

इसलिए कहा जाता है कि किसी का दिल मत दुखाओ और किसी की हाय मत लो सब प्रभु के बनाए हुए जीव हैं।

इसलिए हर समय प्रभु के नाम का सिमरन करते रहो।

जो अपने भाग्य का है वह खुद चलकर आएगा और जो अपने भाग्य का नहीं है वह छीनकर लाया हुआ भी चला जाएगा

स्व.श्रीमती देवकी देवी पाठक श्रद्धांजलि सभा में याद की गईं

मुंबई— समाज सेविका श्रीमती देवकी देवी जगदीश पाठक का दुःखद निधन गत दिनों मुंबई में हो गया। दिवंगत को श्रद्धासुमन अर्पित करने हेतु श्रद्धांजलि सभा का आयोजन लैंड मार्क हॉल,गोरेगांव पुर्व पर किया गया। पाठक परिवार मूलतरू पुरेबसई,सुर्यगढ़,पट्टी,प्रतापगढ़ के निवासी हैं।

स्व. देवकी जी अपने पीछे जगदीश पाठक (पति), दीपक, दिलीप (सुपुत्र) आशा,अर्चना (सुपुत्री), नाती, पोतों सहित भरापुरा परिवार छोड गई हैं। इस अवसर पर वरिष्ठ समाज सेवक डॉ.बाबुलाल सिंह,डॉ.सुनिल चव्हाण,बीरेन्द्र पाठक (महासचिव उत्तर भारतीय मित्र मंडल मुलुंड), मुकेश श्रीवास्तव,संकठा प्रसाद पांडेय,योगेन्द्र श्रीवास्तव,रतिनाथ शुक्ल, सुरेंद्र मिश्र, विजय पाठक,जगतनारायण पाठक, शीतला प्रसाद सिंह, मैथ्यु चेरियन, राजेश सिंह, विजय यादव, सुनीता श्रीवास्तव राजेश पाठक, अविनाश पाठक, अतुल पाठक सहित कई गणमान्य लोगों ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए तथा उनके सामाजिक कार्यों,मिलनसार एवम हसमुख स्वभाव को याद किया। इस अवसर पर दिवंगत का त्रयोदश संस्कार भी संपन्न हुआ।

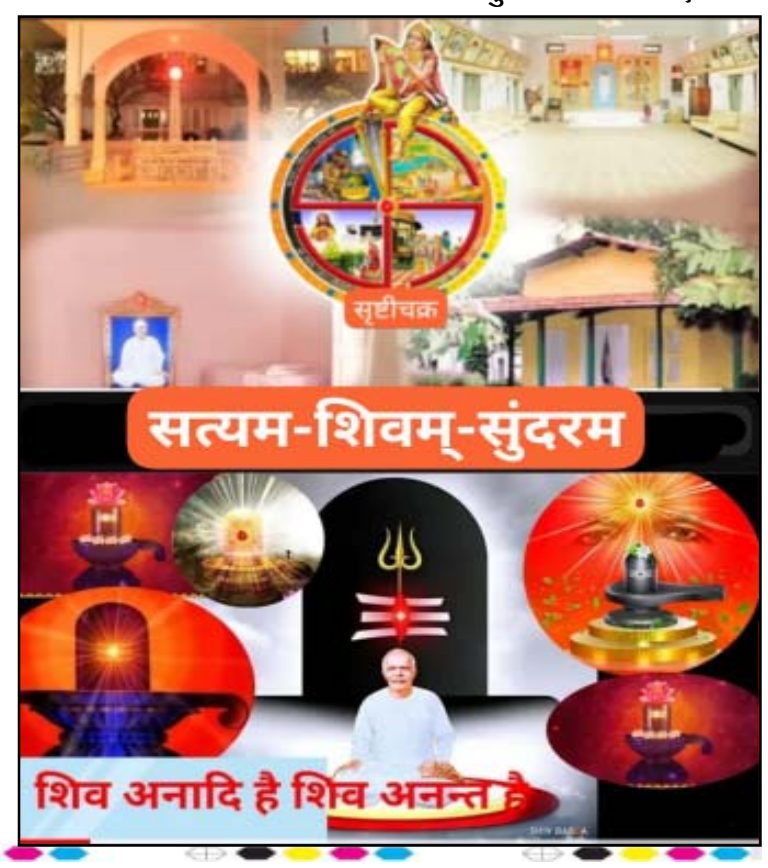

डॉ निकेश जैन माधानी ने अपनी मातृभूमि भटाना गांव में श्री शान्तिनाथ दादा की 108 दिये से आरती करके मनाया अपना जन्मदिन

बॉलीवुड से अभिनेता मुकेश ऋषि, शाहबाज खान और बिंदू दारासिंह सहित कई बड़ी हस्तियों ने दी उन्हें जन्मदिन की बधाई

मुंबई। युवा बिजनेसमैन डॉ निकेश ताराचंद जैन माधानी ने राजस्थान में अपनी मातृभूमि भटाना गांव में श्री शान्तिनाथ दादा की 108 दीपक से आरती करके अपना जन्मदिन मनाया जहां परिवार के अलावा स्वजन और समर्थक तथा शुभचिंतक उन्हें बधाई देने पहुंचे। युवा बिजनेसमैन डॉ निकेश ताराचंद जैन माधानी ने बताया कि जन्मदिन को सफल बनाने के लिए अपनी मातृभूमि भटाना में श्री शान्तिनाथ दादा की 108 दीपक की आरती का लाभ मिलने से बड़ी प्रसन्नता हुई जो मेरे लिए जन्मदिन का सबसे बड़ा गिफ्ट था जहां भगवान श्री शान्तिनाथ दादा, मुनि श्री इंद्ररक्षित विजय जी महाराज, परिवार एवं स्वजनों का आशिर्वाद प्राप्त हुआ। डॉ निकेश जैन भी अपने आप में किसी सेलिब्रिटी से कम नहीं हैं और वह व्यवसाय जगत के साथ बॉलीवुड में गोल्डमैन के रूप से प्रसिद्ध हैं। उन्हें कई दिग्गज हस्तियों ने वीडियो मैसेज के माध्यम से जन्मदिन की बधाई प्रेषित किया जिनमें फिल्म अभिनेता मुकेश ऋषि, बिंदू दारा सिंह, शाहबाज खान, नीरज भारद्वाज, एक्शन डायरेक्टर टीनू वर्मा, एक्टर एजाज खान, रामकुमार पाल, डॉ प्रकाश टाटा, पंडित सत्यम, शिवसेना प्रवक्ता आनंद दुबे, मनोज सोलंकी, मॉडल एक्ट्रेस सीमा मीना और ब्राइट आउटडोर के मुखिया योगेश लखानी का नाम प्रमुख है। आपको बता दें कि डॉ निकेश ताराचंद जैन माधानी बहुत कम उम्र से ही बिजनेस में सक्रिय हैं। एक युवा उद्यमी के रूप में उन्हें अनगिनत अवार्ड प्राप्त हो चुके हैं साथ ही उन्हें कई पुरस्कार समारोह में चीफ गेस्ट के रूप में सेलिब्रिटियों के साथ आमंत्रित किया जाता है। उनकी कंपनी पुष्पा गृह उद्योग और माधानी फायनांस एंड इंटरटेनमेंट प्रमुख कार्यक्रमों में पार्टनर की भूमिका निभाती है।

परिष्कार सम्मान समारोह

परिष्कार पत्रिका स्मारिका और विशेषांक का विमोचन और विशिष्ट प्रतिभाओं का सम्मान समारोह ऑडिटोरियम साइंस पार्क शास्त्रीनगर मे आयोजित किया गया! जिसमे विभिन्न विद्यालयों के गणमान्य निदेशक, प्रधानाचार्य एवं पदाधिकारियों और विद्यार्थियों ने भाग लिया! सभी का शॉल ओढ़ा कर और सर्टिफिकेट देकर सम्मनित किया!

राष्ट्रपति पदक विजेता वरिष्ठ पो. नि.दत्तात्रय खंडागले का सम्मान

मुंबई– भांडुप पुलिस स्टेशन के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक दत्तात्रय खंडागले को पुलिस विभाग में उल्लेखनीय कार्य हेतु इस वर्ष राष्ट्रपति पदक से नवाजा गया। यह पुरस्कार (पदक) महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम रमेश बैस के शुभ हस्तों उन्हें राजभवन,मुंबई पर आयोजित समारोह में प्रदान किया गया।

उनकी उपलब्धि पर भांडुप के वरिष्ठ समाज सेवक मंगला शुक्ल,मदनलाल मौर्य (अध्यक्ष मौर्य समाज),युवा ब्रिगेड एसोसिएशन मुंबई के अध्यक्ष डॉ.सचिन सिंह,समाज सेवी संतोष मौर्या,महेंद्र मिश्र,रमेश यादव ने पुष्प गुच्छ एवम गमछा प्रदान कर दत्तात्रय खंडागले को शुभकामनायें दिया।

आओ योग का सहयोग करें

आओ योग करें, चलो योग करें
हम योग का नित्य प्रयोग करें।
तन स्वस्थ बनें, मन स्वच्छ बनें
सारा जीवन आरोग्य करें...

सबका मालिक एक है
सबका जो भगवान है
योग उसी से जोड़ता रिश्ता
यही इबादत-ध्यान है

वक्त की यह आवाज़ है
इस योग को सारे लोग करें...

मन दर्पण दमक जाता है
आत्म-चिंतन चमक जाता है
चेहरे पे रौनक आ जाती
जन-जीवन महक जाता है

सद्विचार-सदाचार बढ़े
योग का हम उपयोग करें...

यह योग बड़ा सुखकारी है
जन-जन का हितकारी है
जहां को जन्नत कर देगा
हर दिल में मोहब्बत भर देगा

सारा सुखमय संसार बने
आओ योग का सहयोग करें...

ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू, राजस्थान

आज विश्व दिवस योग है। तो भारत में शुरु हुवा था। और आज विश्व सारे। मनरहे है। आप भी इस का फहीदा ले।

वक्त के संग हो बदलाव जरूरी तो नहीं।
वक्त भर देगा हर एक घाव जरूरी तो नहीं।

तमाम उम्र तपिश में ही गुजर सकती है।
बुझेगा वक्त का अलाव जरूरी तो नहीं।

शज़र घना है बहुत और खूब फैला है।
सुकून देगी उसकी छांव जरूरी तो नहीं।

शहर को कोसते हो खूब शहर में रहकर।
गांव में रहके मिले गांव जरूरी तो नहीं।

मांग लें माफियां इल्जाम सभी सर ले लें।
दूर हो जाए पर दुराव जरूरी तो नहीं।

ताज पहने हुए देखा है लकड़बग्घों को।
लोग वाजिब करें चुनाव जरूरी तो नहीं।

पहन लो खूब तुम ताबीज़ भाई चारे की।
छोड़ दे सामने वाला भी अपने दांव जरूरी तो नहीं।

सूखी बछिया का दान करते हरा बटुआ रख।
बनेगी वह तुम्हारी नाव जरूरी तो नहीं।

लड़ाई जीती नहीं जाती बिन पियादों के।
बनेगा हर कोई ही राव जरूरी तो नहीं।

जिसकी आंखों में सोई झील तुम्हे दिखती है।
उसके दिल में भी हो ठहराव जरूरी तो नहीं।

आज जो मिल रहा है सोच के ठुकराओ नज़र।
बढ़ेगा कल तुम्हारा भाव जरूरी तो नहीं।

कुमार कलहंस
बोईसर, जिला–पालघर

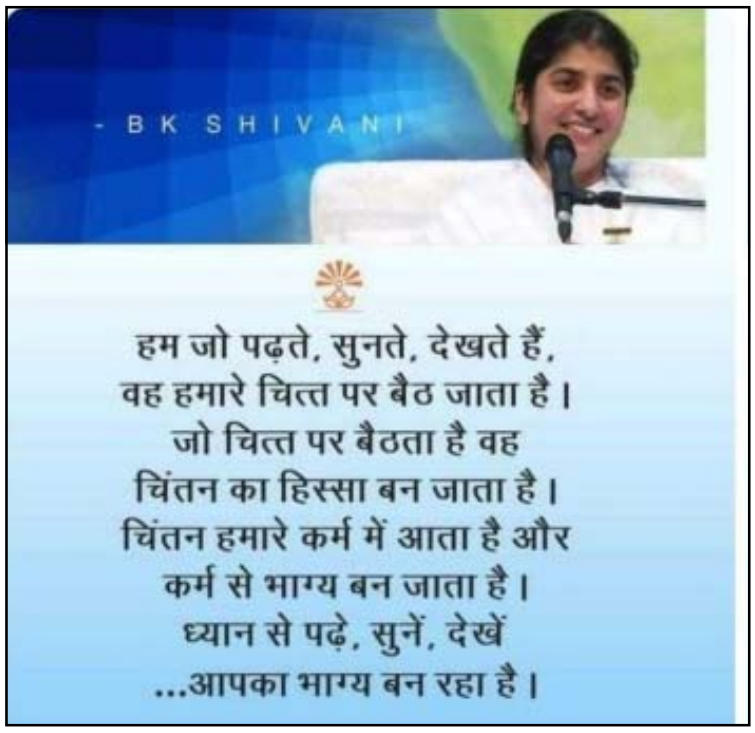

आरबीआई गवर्नर ने कहा, अप्रैल–जून तिमाही में विकास दर 7.2 प्रतिशत से ज्यादा रहने का अनुमान

मुंबई । रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के गवर्नर शक्तिकांत दास ने उम्मीद जताई है कि पिछले वित्त वर्ष की मजबूत विकास दर चालू वित्त वर्ष में भी जारी रहेगी।? उन्होंने कहा कि वित्त वर्ष 2025 की अप्रैल–जून तिमाही में भी मजबूत विकास दर जारी रहेगी। इसे अर्थव्यवस्था की मजबूत बुनियाद से बल मिलेगा। दास ने मंगलवार को एक मीडिया कार्यक्रम में कहा, हमें इस बात को लेकर काफी उम्मीद है कि हमने इस साल की पहली तिमाही के लिए जो अनुमान लगाया है — 7.2 प्रतिशत का, हम उससे आगे 7.3 प्रतिशत पर चले जाएंगे। दास ने यह भी कहा कि निजी खपत में सुधार हो रहा है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि कृषि क्षेत्र में मजबूत वृद्धि के कारण ग्रामीण मांग में सुधार हो रहा है। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने इस बार सामान्य से अधिक मानसून का अनुमान लगाया है, जिसके चलते खरीफ उत्पादन में वृद्धि होने की उम्मीद है। आरबीआई ने 7 जून को वित्त वर्ष 2024–25 के लिए वास्तविक जीडीपी का अनुमान पहले के अनुमान 7 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.2 प्रतिशत कर दिया था। गवर्नर ने कहा कि वित्त वर्ष 2025 की पहली तिमाही में जीडीपी विकास दर 7.3 प्रतिशत, दूसरी तिमाही में 7.2 प्रतिशत, तीसरी तिमाही में 7.3 प्रतिशत और अंतिम तिमाही में 7.2 प्रतिशत रहने की संभावना है।

मेरी कविता है, बस, विमाता इतना बतला दो...

एक ही तात के लाल हम सारे.
आप माताओं के हम सभी दुलारे,
एक महल के हमारे सारे चौबारें ,
फिर ममता के आँचल मे भेद कहाँ से आये...
हे मातृका जरा समझा ना ...

कौशल्या से बढ़कर मैंने तुमको माना,
अपनी जननी से बढ़कर तुमको जाना,
कभी अनुज भरत को विमातृ ज न जाना,

फिर ऐसी क्या धर्म की विवश ता,
हे धन्या जरा बतलाना...

मोह नहीं माते मुझे सिंहासन का,
मोह नहीं महल के सुख जीवन का
चाह नही अयोध्या नरेश होने की,
स्वतः ही धर देता शिरो भूषण ,
हे मातृ गंधा ,
पर चौदह वर्ष के वनवास की कटुता
कैसे हृदय मे समाई,
बस, इतना मुझे बतलाना....

लक्ष्मी यादव

(पाँच मोती ज्ञान के)

तुम्हारे पास धन है .....मगर दया नही
तुम्हारे पास बल है.....मगर क्षमा नही
तुम्हारे पास बुद्धि है... मगर ज्ञान नही
तुम्हारे पास आँख है, मगर पहचान नही
तुम सर्वशक्तिमान हो मगर भगवान नही

(रचना अवधेश यदुवंशी)

सीखने की सीख

बीती बातें बिसार कर, वर्तमान में जीना सीखो.
अधरों पर मुस्कान लिये आँखों के आँसू पीना सीखो।

प्रकृति के इस शुभ प्रांगण में, साँझ सवेरा आता–जाता,
दिन में बनो गुलाब, रात में दीपक बनकर जलना सीखो।
बीती बातों को. .....

दुख से भरा हुआ जग सारा, कौन यहाँ हँसता है दिल से,
आँखों की रिमझिम के पीछे, इन्द्र धनुष बन जाना सीखो।
बीती बातों को. .....

जीवन पथ है लम्बा कितना,आज तलक किसने है जाना,
टूटे से रिश्ते – नातों को, प्यार पिरोकर सीना सीखो।
बीती बातों को. .....

वह तेरा है, यह मेरा है, कहते – कहते चले जा रहे,
जीवन की आपाधापी में, सबके बनकर रहना सीखो।
बीती बातों को. .....

जिसको कहते वह मेरा है, वह भी अपना कभी नहीं था,
पथ में कभी लगे जो ठोकर, हँसकर स्वयं सँभलना सीखो।
बीती बातों को. .....

अवधेश राय
बी.ए. आर.सी. कॉलोनी, बोईसर, पालघर, महाराष्ट्र

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।

सम्पादक
पूजा प्रसाद पाण्डेय
मो0– 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।